

शिशु के लिए एक पहल



परिणामस्वरूप स्वास्थ्य मानक पत्रों तक सीमित रह गए और इनके डिब्बाबंद दुग्ध उत्पादों में मिलावट का स्तर इतने खतरनाक स्तर तक पहुंच गया कि नवजातों के शारीरिक व मानसिक विकास में अवरोध प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगे। लेकिन विगत दिनों मोदी सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने जिस तरह सरकारी चिकित्सालयों में डिब्बाबंद कंपनियों द्वारा अपने ब्रांड प्रमोशन के अभियान पर प्रतिबंध लगाया है, उस उपक्रम से जच्चा-बच्चा के प्रति सरकारी चिंता उभर कर सामने आती है। उल्लेखनीय है कि स्तनपान अभियान को बढ़ावा देने के नाम पर सरकारी चिकित्सालयों के जच्चा-बच्चा कक्ष में घुसपैठ करने की ऐसी कंपनियों की कोशिश पर अब पूर्ण प्रतिबंध लगने वाला है। सरकार ने स्वीकार किया कि यह अनैतिक काम है और वह इस पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए सभी सरकारी चिकित्सालयों को अधिसूचना भेजेगी। इस संदर्भ में स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार

जि स समय एक सौ पच्चीस करोड़ की जनसंख्या वाला भारत अपनी भौगोलिक सीमाओं के बिवाद में सीमांत देशों से कई तरह के शीतल्युद्धों में उलझा हो और आए दिन इस विषय की जटिलता को सुलझाने में ही अधिक व्यस्त हो, तो देश के भीतर की अन्य समस्याएं कहीं न कहीं विचार, योजना और क्रियान्वयन की सूची में पैछे छूट जाया करती है। समस्याओं की इस सूची में एक बड़ी समस्या देश में खाय पदार्थ में हो रही जानलेवा मिलावट है। मिलावट का धंथा अनाज और सब्जियों को ही नहीं बल्कि दुग्धमुद्देश शिशुओं के लिए तैयार डिब्बाबंद दुग्ध पदार्थों को भी प्राणघातक बना रहा है। डिब्बाबंद दुग्ध पदार्थ भी इतने जटिल रासायनिक मिश्रण से तैयार हो रहे हैं कि उनका प्रत्यक्ष दुश्प्रभाव शिशुओं के स्वास्थ्य पर देखा जा सकता है। इनका उत्पादन करने वाली कंपनियों का एकमात्र ध्येय रूपए कमाना रह गया है। उन्हें नौनिहालों के स्वास्थ्य के प्रति अंशमात्र भी चिंता नहीं है पिछले ढेढ़ दशक में दुनिया की देखादेखी भारत में भी यह प्रचलन गर्भधारण करने वाली स्त्रियों के संदर्भ में तीव्रता से आया कि प्रसूति के बाद स्त्रियां शिशुओं को अपना दूध पिलाने के प्रति हतोत्साहित हुईं। इसके दो प्रमुख कारण थे। पहला, प्रसूता की प्रसूति के उपरांत कमज़ोर और अस्वस्थ शारीरिक स्थिति। इस परिस्थिति में कोई भी प्रसूता वास्तव में अपने शिशु को स्तनपान करने योग्य शारीरिक शक्ति नहीं रखती और उसे विवश होकर शिशु के लिए डिब्बाबंद दुग्ध पदार्थों पर निर्भय रहना पड़ता है। दूसरा कारण बहुत ही अजीब है। इसका उल्लेख करने पर स्त्री विमर्शकर्ताओं का टोला अपने कुतुकों से कहीं इस दूसरे कारण को ही अप्रासींगिक न बना दे, इसका डर है। दूसरा कारण, जिससे प्रेरित होकर प्रसूताएं शिशुओं को स्तनपान नहीं करतीं, वह है प्रसूता स्त्रियों का अपने शारीरिक सौंदर्य के प्रति अगाध लगाव। पहले कारण में प्रसूता स्त्री वास्तव में समर्थ नहीं होती कि वह नवजात शिशु को अपना दूध पिला सके। शारीरिक कमज़ोरी और प्रसूति के दौरान की असहनीय पीड़ा के कारण वह प्राकृतिक रूप से दुधहीन हो जाती है। इस स्थिति में स्वाभाविक रूप से कहें या विवशता में, नवजात को मां के स्तनपान का अवसर नहीं मिल पाता। लैकिन दूसरे कारण में नवजात बच्चों के प्रति ममतामयी दृष्टि की कमी और मां का अपने शारीरिक सौंदर्य के प्रति अति लालसा रखना ही माता और शिशु के खराब स्वास्थ्य के कारक हैं। इस स्थिति को डिब्बाबंद दुग्ध उत्पादों (पाउडर, क्रीम, तरल दुग्ध पदार्थ) का व्यापार करने वाली कंपनियां अपने व्यापारिक लाभार्जन के लिए भुनाती हैं। ऐसी कंपनियों ने गर्भधारण, प्रसूति और नवजात शिशु के बारे में विश्व के अधिकांश लोगों की नासमझी और अपूर्ण जानकारी का भरपूर लाभ उठाया और पिछले साठ-सत्तर सालों में उनका इस आधार पर डिब्बाबंद दुग्ध उत्पाद का कारोबार बहुत बढ़ चुका है। विकसित और नियमकानूनों को कठोरता से लागू करने वाले देशों में तो इन कंपनियों द्वारा अपने दुग्ध खाद्य उत्पाद, शिशुओं के लिए ऐसे देशों द्वारा विहित स्वास्थ्य मानकों के अनुसार तैयार किए जाते रहे हैं, लैकिन भारत जैसे देशों में इन्होंने अपने स्वास्थ्य मानकों को यहां की लचर सरकारी व्यवस्था के कारण स्थिति कर दिया या कहें इस देश के अस्त्वाचार के कारण अपने दुग्ध उत्पादों को केवल और केवल लाभार्जन के आधार पर बेचना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य मानक पत्रों तक सीमित रह गए और इनके डिब्बाबंद दुग्ध उत्पादों में मिलावट का स्तर इतने खतरनाक स्तर तक पहुंच गया कि नवजातों के शारीरिक व मानसिक विकास में अवरोध प्रत्यक्ष की पौष्टिकता पाई गई।

आबादी और संसाधन



आज भारत की आबदी एक सौ चालीस के करीब पहुंच चुकी है। लेकिन क्या देश के पास इतनी बड़ी आबदी के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं, यह बड़ा सवाल है। आबदी के हिसाब से संसाधनों और खाद्य का पर्याप्त नहीं होना कम पीड़ादायक बात नहीं है। यह बेहद ज़रूरी है कि हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीने के लिए न सिर्फ खाद्य, बल्कि दूसरे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं और दूसरे संसाधनों का लाभ मिले। यह जिम्मेदारी सरकार की भी है कि वह हर नागरिक को वे सारी चीजें मुहैया करवाएं जिनका वह हक्कदार है, और जो उसके व परिवार के भरण-पोषण के लिए ज़रूरी है। यह गंभीर बात इसलिए है कि स्वास्थ्य, शिक्षा, भुखमरी, कुपोषण जैसे तमाम वैशिक सूचकांकों में भारत की स्थिति दयनीय ही है। आज भारत की पैसठ फ्रीसद आबदी पांच साल से उनसठ साल के बीच की है। सबसे

ज्यादा जरूरत इसी आबादी वर्ग की है। बढ़ती जनसंख्या के कारण देश में बेरोजगारी और अपराध बढ़ते हैं। इसलिए आज आवश्यकता यही है कि कामकाजी उम्र के हर व्यक्ति को रोजगार के अवसर भी मिलें ताकि वह अर्थव्यवस्था में किसी न किसी तरह से योगदान देता रहे। आज यह भी सत्य है कि जनसंख्या में हमारे युवाओं का बड़ा प्रतिशत किसी वरदान से कम नहीं है। युवा वर्ग अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में सबसे ज्यादा सहायक हो सकता है, बस उसे काम देने की जरूरत है। लेकिन देखने में आ रहा है कि पर्याप्त सासाधनों के बावजूद रोजगार सृजन नहीं हो पा रहा है। किसी देश की बढ़ती जनसंख्या को यदि सही ढंग से नियोजित ना किया जाए तो कई गंभीर चुनौतियां पैदा होने लगती हैं। बढ़ती आबादी भी हमारे सामने बड़ी चुनौती है। समय-समय पर जनसंख्या नियंत्रण कानून लाने की बात उठती रहती है। देश का हर समुदाय अगर अपनी ओर से उन्नति एवं खुशहाली में अपना योगदान देता रहे तो बढ़ती आबादी का सही उपयोग हो सकेगा और देश तरक्की के रास्ते पर तेजी से बढ़ेगा। अत सरकार को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देने के प्रयासों को प्राथमिकता देनी चाहिए। कश्मीर में फिर से आतंकी गतिविधियां बढ़ गई हैं। जैर मुसलमानों खासतौर से कश्मीरी पडितोंऔर प्रवासी लोगों को लक्षित कर लगातार हत्याएं हो रही हैं। पिछले कुछ दिनों में ही लगभग दस से ज्यादा हत्याएं हो गईं। जिस तरह से लोगों को सरेआम मारा जा रहा है उससे हर नागरिक दहशत में है। हिंदू वहां से पलायन के लिए मजबूर हो रहे हैं। लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। कश्मीरी पडितों ने सरकार से मांग की है कि उनकी सुरक्षा का बदोबस्त किया जाए। घाटी में जिस तरह के हालात बन गए हैं वे गंभीर हैं। इसलिए जनता में सुरक्षा का भाव पैदा करने के लिए आतंकियों पर नकेल कसना जरूरी है।

समाज की नजर में सुंदर मानी जाने वाली स्त्रियां अगर सुंदरता को संरक्षित करने के उद्देश्य से कुछ सौंदर्य प्रसाधन प्रयोग में ला कर आत्मिक आनंद की अनुभूति करने की कोशिश करती हैं तो अम की स्थिति पैदा हो जाती है। आलम यह कि पुरुषों के बीच आकर्षण का केंद्र बनने की चाह खुद सुंदर नहीं लगने वाले और भ्रमित स्त्री-पुरुषों को कुढ़ने पर मजबूर करती है। ऐसे में एक ही बात अमल के लायक लगती है कि दुनिया कुछ कहे, उसकी फिक्र नहीं की जाए। अपने जीवन और अपनी अस्मिता के लिए जो जरूरी लगे, वह किया जाए।

यों तो समूची दुनिया में अलग-अलग शक्ति में स्थिति बहुत अलग नहीं है, लेकिन खासतौर पर भारत की महिलाएं एक तरह से मूँक नेवी रही हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था और मानसिकता ने जो संस्कारों की धुट्टी पिला कर उन्हें पोषित किया, उसी में रच-बस कर उसी तरह जीना। जीवन भर रसोईघर में खुद को झोंकने की, अपनी शरीरिक मेहनत और झुलसने-जलने की, बर्तनों के साथ अंगुलियों के घिस जाने के बावजूद उपर क तक नहीं निकलने को लेकर अभ्यर्ता और सहज हो जाने के बावजूद द्रुतकार खाकर जीतीं निराश आंखों वाली आते। माहवारी से जुड़े महावृत्तांतों ने स्त्रियों को अछूत और उसके बनाए निवालों को विष-स्वप्न प्रस्तुति दी। उसकी दारुण अनकहीं कथाएं, जिसे वह अपना कहती रही, वह भी भाईं, पति, बेटे के हिस्से की रहीं। कहीं न कहीं वह खुद जननी के रूप में पारंपरिक ढांचे में ढाल देने को प्रयासरत रही। कोल्हू के बैल-सी जुटी रहते हुए चाहे बदन टूट कर खडित अवस्था में हो, सभी की तरह अगर उसे भी शरीर के दर्द के द्वारा आराम का ख्याल आए तब भी उसे काम में जुटे रहना है। इस स्थिति में भी पति अगर अरमानों की सेज सजा बैठे तो प्रसन्न होने की नाटकीयता का निर्वाह। उसकी तुनकभिजाजी तो कर्ती बर्दाशत नहीं की जाती। तमाम अंदरूनी चीजों को दबा कर, दोहरी जिंदगी की कसौटियों पर खरा उतरने की जिद लिए कूद पड़ती हैं घर, कार्यालय के मैदाने-जंग में अपनी जीत का परचम लहराने। वहां वह हृदय चीरने वाली दृष्टियों का बार झेल कर, खुदक खाकर, जुबान रुपी घोड़े की लगाम छोड़ शब्दों के चाबुक चला कर ही अपनी अस्मिता की रक्षा कर पाती है। समाज की नजर में सुंदर मानी जाने वाली स्त्रियां अगर सुदरता को संरक्षित करने के उद्देश्य से कुछ सौंदर्य प्रसाधन प्रयोग में ला कर आत्मिक आनंद की अनुभूति करने की कोशिश करती है तो भग्न की स्थिति पैदा हो जाती है। आलम यह कि पुरुषों के बीच आकर्षण का केंद्र बनने की

A photograph of a woman with long dark hair, wearing a grey long-sleeved top. She is leaning forward with her head down, her hands covering her face. The background is a plain, light-colored wall.

